

**जुगाड़ के सामान से तैयार किया
ट्रैक्टर, ट्रॉली और वाटर पंप**

आम गंगाराम बने आईआईटी के खास मेहमान

अक्षय बाजपेयी >> इंदौर

महज आठ हजार रुपए में ऐसी साइकिल ट्रॉली, जो तीन क्विंटल तक भार उठा लेती है। पांच हजार रुपए में बिना पेट्रोल-डीजल के खेत जोतने वाला ट्रैक्टर और ऐसा वाटर पंप, जो बिना बिजली के एक घंटे में 800 वर्गफीट में सिंचाई कर सकता है। इनमें से किसी भी मशीन की लागत 10 हजार से ज्यादा नहीं है।

ये आविष्कार किसी बड़े टेक्नोक्रेट या कंपनी ने नहीं बल्कि गोरखपुर के किसान गंगाराम ने किए हैं। गुरुवार को वे आईआईटी इंदौर के खास मेहमान थे। सिमरोल स्थित कैपस में तीन दिनी कॉन्क्लेव में वे टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट के दिग्गजों को मात देते हुए चर्चा का विषय बने रहे।

मैकेनिक की दुकान में काम करते-करते ख्याल आया

गंगाराम बताते हैं-सन् 2000 तक मैं गोरखपुर में मैकेनिक की दुकान में काम करता था। यही से खुद उपकरण तैयार करने का ख्याल आया। 2010 में तीन पहिए की साइकिल बनाई। 2011 में मिनी ट्रैक्टर बनाया। 2013 में वाटर पंप बनाया। सबकुछ जुगाड़ के सामान से तैयार किया। 10 हजार से ज्यादा लागत एक भी उपकरण की नहीं है। विज्ञान परिषद् इलाहाबाद ने पहली बार इसे प्रोत्साहित किया। फिर आईआईटी वालों ने मेरे छोटे से आविष्कार को स्वीकारा। अब मैं बोंवनी करने वाली मशीन तैयार करने में जुटा हूँ।

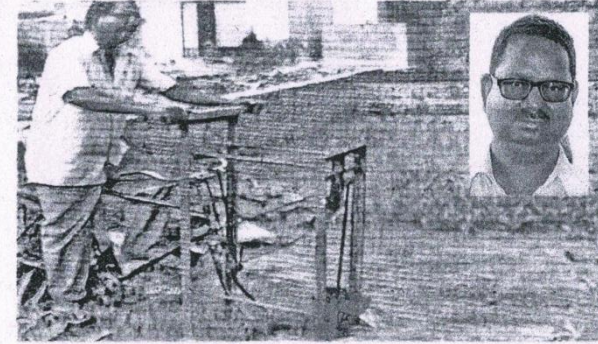
**बटन दबाते ही
ट्रॉली नीचे रख
देती है सामान**

तीन पहियों की ट्रॉली के पीछे के दोनों पहिए बड़े आकार के हैं। इनमें बेरिंग हैं। इसे चलाने में ज्यादा श्रम नहीं लगता और तीन क्विंटल तक भार उठा सकती है। पहियों के सहारे हाईड्रोलिक ट्रॉली लगाई है जो बटन दबाते ही सामान नीचे रख देती है।

**जुताई के लिए
बनाया ट्रैक्टर**

जुताई के लिए बनाए एक मिनी ट्रैक्टर में लोहे के तीन पहिए हैं। पीछे के पहिए के बीच में एक प्लेट है। यहां हल व गियर लगे हैं। जो किसान ट्रैक्टर नहीं खरीद सकते, वे इससे जुताई कर सकते हैं।

**साइकिल चलाते ही
हो जाती है सिंचाई**



इन दोनों उपकरणों की ही तरह गंगाराम ने एक वाटर पंप का आविष्कार भी किया है। यह भी साइकिल से बनाया गया है। सिस्टम ऐसा है कि साइकिल चलाने पर पानी सर्कुलेंट होता है। एक घंटे में 800 वर्गमीटर तक के एरिए में सिंचाई की जा सकती है।

“गंगाराम ने अच्छा काम किया है। इसलिए हमने उन्हें कॉन्क्लेव में आमंत्रित किया। उन्हें प्रोत्साहित करना जरूरी है। इससे उत्साह बढ़ता है। -डॉ. एसके विश्वकर्मा, कन्वीनर, आईएसी